होली के रंग
मुर्खदिवस का औचित्य
How LIFE IS
JEEVAN मग
February-March 2014; अंक -5
A COMPLETE MAGAZINE FOR ALL AGE GROUPs IN ENGLISH AND हिन्दी
INDIA'S FIRST ONLINE BILINGUAL MAGAZINE BY STUDENTS

OUR DEDICATED TEAM

EDITOR-IN-CHIEF

Akash Kumar is a student of class XI Science at Jamia Millia Islamia, New Delhi. He hails from Motihari in Bihar. Fondly called Man Of Sky by his friends, he is a passionate reader. Email- akash@jeevanmag.tk Facebook- www.facebook.com/akashmanofsky

EXICUTIVE EDITOR

Nandlal Mishra is pursuing B.Tech in Humanities (1st year) from Delhi University. He is basically from Samastipur in Bihar. He is fondly called Sumit by his friends. Email- nandlal@Jeevanmag.tk Facebookwww.facebook.com/nandlal.sumit

ASSOCIATE-EDITOR:
Anamika Sharma
(XII Science, Convent Of Jesus &Mary, Shimla)

Graphics: Anil Bhargava;
Design: Vikhyat & Aryan Raj
Coverpage source:http://latestforyouth.com/2014/02/happy-holi-2014-whatsapp-free-sms-download-holi-whatsapp-sms/

SUB-EDITORS

Kuldeep Kumar (XI Science, Jamia Millia Islamia,New Delhi)
Shahid Iqbal (XI Science, Jamia Millia Islamia)
Aminesh Aryan (XII Arts, Kendriya Vidyalaya, Kankarbagh,Patna)
Raghvendra Tripathi (B.Tech in I.T. (2st Yr.) Delhi University)
Kumar Shivam Mishra (BA(H) English, Commerce College, Patna)
Akshay Akash, Santosh kumar, Ashish suman (B.Tech in Humanities (1st Yr.) Delhi University)
Ankit Nayak (Xth , St. Joseph Public School, Samastipur)

PUBLIC RELATION OFFICERS

Aryan Raj (XI Science, Allen Career Institute, Kota)
Faisal Alam, Rishabh Amrit (XI Science, Shantiniketan Jubilee School,Motihari)
Aashutosh Pandey (XI Science, M.S. college, Motihari)
Ankit Kundan Dubey (B.A-Pol. Science, M.S. College, Motihari)
Alok Kumar Verma (XIIth Science, Lucent international school, Patna)
Radhesh Kumar (K. Singh Vision Classes, Patna)

Publisher- Blue Thunder Student Association (A VIPNET club), C/O Vijay Kr. Upadhyay, West of Dr. Shambhu Sharan, Belbanwa, Motihari-845401, Bihar. Facebook www.facebok.com/bluethunderstudentassociation
Delhi Contact- Akash kumar, iqbal Manzil, Jamia School Hostels, Jamia Millia islamia, New Delhi-25 Phone- +91 7827992817 or
Nandlal Mishra, V.K.R.V hostel, North Campus, University of Delhi, New Delhi Phone- +91 9631021440

नमस्ते !!

होली और हम

होली दरवाज़े पर खड़ी है पर फागुन की मस्ती शुरू हो चुकी है। सामाजिक एकता व समरसता का सन्देश देता यह त्यौहार भारतीय मानस के दिलों में विशिष्ट स्थान रखता है।

यह मौसम भी कुछ कुछ ऐसा ही होता है। ठंड जा चुकी होती है और लोग-बाग रजाइयों से निकल अपनी सुस्ती और आलस्य को विदा कर रहे होते हैं। फागुन के महीने में फिज़ा चंचल हो उठती है और मन-मयूर नाचने को उत्सुक। बच्चों में होली को लेकर दीवानगी देखते ही बनती है। हम बस इसी बात का इंतज़ार कर रहे होते हैं कि परीक्षाएं बीतें और फागुन की मस्ती में डूब जायें।

लोकसभा चुनावों के कारण इस बार होली भी चुनावी हो उठी है। नहीं नहीं, बेहतर यह कहना होगा कि इस बार होली से निकटता (समय के अन्तराल में) के कारण लोकतंत्र का उत्सव भी रंगीन हो चला है। सियासी गलियारों में सरगर्मी तेज हो चुकी है और नेतागण एक-दुसरे पर मुख की पिचकारी से आरोप रूपी रंगों की बौछार करने से बाज़ नहीं आ रहे। होली के अवसर पर अवसरवादी राजनीति प्रबल हो उठी है और नेता गिरगिट की तरह रंग बदलते फिर रहे हैं। 'राजनीति में कोई स्थाई दुश्मन नहीं होता' को चरितार्थ करते विरोधी पार्टियाँ गले लग रही हैं।

आप भी होली का मज़ा लीजिये और हाँ, दुसरों के जीवन में ख़ुशी के रंग भरना ना भूलियेगा |

आपका अपना दोस्त

आकाश कुमार

(प्रमुख संपादक,जीवन मग)

काव्य-सुधा...

ख़ुद को जलाते चलना...

राह के पत्थर हटाते चलना
पथ पर फूल बिछाते चलना
अन्धेरे तो मिलेंगें ही मिलेंगें
पर तुम चिराग हो, ख़ुद को जलाते चलना |

लक्ष्य पथ पर निडर हो चलना
गिर ना जाओ संभल के चलना
समय के दुश्मन तो रोकेंगें ही रोकेंगें
पर तुम कमान हो, ख़ुद को तीर बनाते चलना |

आँधी में भी हो मगन चलना
भंवर में भी हो सबल चलना
सागर की लहरें तो डुबोयेंगीं ही डुबोयेंगीं
पर तम माँझी हो, ख़ुद को पतवार बनाते चलना ||

- **ब्रजमोहन** (आप हंसराज कॉलेज , दिल्ली विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक एवं हरफ़नमौला व्यक्तित्व हैं|)

प्रिय.....

-राघवेंद्र त्रिपाठी

इस अनजाने अपनेपन की प्रिय,
मैं नहीं चाहता कोई वर्णन, कोई परिभाषा हो ||
मेरे जीवन की सुप्त चेतना,
तेरे नयनो में होती विम्बित
मेरा पथ आलोकित करती,
तेरे संग की मीठी स्मृति ||

इससे ज्यादा इस सुप्त ह्रदय में
मैं नहीं चाहता बाकी कोई भी अभिलाषा हो ||
बस मेरे मानस अम्बर पर,
काले मेघों सी छा जाना ||
जीवन के मेरे मरू-थल में,
इक बार प्रिय तुम आ जाना ||

ये दग्ध ह्रदय अपना, प्रिय
मैं नहीं चाहता चिर विरही चातक प्यासा हो ||
मेरे मानस आले में तुम हो,
प्राणों में प्रिय तुम्ही शेष ||
है अंतिम बार यही इच्छा,
देखूँ जी भर कर तुम्हे निमेष||

हो ध्येय पूर्ण यह जीवन का
मैं नहीं चाहता बाकि कोई भी इच्छा, आशा हो ||
मौन अधर के प्रश्न सुन सको,
मूक नयन से प्रत्युत्तर दो प्रिय||
इस पथरीले पथ पर जीवन के,
आकर मुझको सम्बल दो प्रिय ||

भारत में फ़रवरी और मार्च महीने ऋतुराज़ बसंत की रंगीनियों और बहारों को समेटे हुए अत्यानंददायक एवं उत्सोवोनुकुल होता है| बसंत भारतीय काव्य साहित्य के मूल में रहा है| बसंत की शुरुआत बसंतपंचमी अर्थात सरस्वती पुजनोत्सव से तथा अंत रंग बिरंगी होली से होती है| प्रस्तुत हैं, क्रमशः इन दोनों अवसरों पर केंद्रित महाकवि निराला और नज़ीर अकबराबादी की ये कालजयी रचनाएँ..... (साभार- कविता-कोश)

देख बहारें होली की.....

जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की।
और दफ़ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की।
परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की।
ख़ूम शीश-ए-जाम छलकते हों तब देख बहारें होली की।
महबूब नशे में छकते हो तब देख बहारें होली की।

हो नाच रंगीली परियों का, बैठे हों गुलरू रंग भरे
कुछ भीगी तानें होली की, कुछ नाज़-ओ-अदा के ढंग भरे
दिल फूले देख बहारों को, और कानों में अहंग भरे
कुछ तबले खड़कें रंग भरे, कुछ ऐश के दम मुंह चंग भरे
कुछ घुंगरू ताल छनकते हों, तब देख बहारें होली की

गुलज़ार खिलें हों परियों के और मजलिस की तैयारीहो।
कपड़ों पर रंग के छीटों से खुश रंग अजब गुलकारी हो।
मुँह लाल, गुलाबी आँखें हो और हाथों में पिचकारी हो।
उस रंग भरी पिचकारी को अंगिया पर तक कर मारी हो।
सीनों से रंग ढलकते हों तब देख बहारें होली की।

और एक तरफ़ दिल लेने को, महबूब भवइयों के लड़के,
हर आन घड़ी गत फिरते हों, कुछ घट घट के, कुछ बढ़ बढ़ के,
कुछ नाज़ जतावें लड़ लड़ के, कुछ होली गावें अड़ अड़ के,
कुछ लचके शोख़ कमर पतली, कुछ हाथ चले, कुछ तन फड़के,
कुछ काफ़िर नैन मटकते हों, तब देख बहारें होली की।।

ये धूम मची हो होली की, ऐश मज़े का झक्कड़ हो
उस खींचा खींची घसीटी पर, भड़वे खन्दी का फक्कड़ हो
माजून, रबें, नाच, मज़ा और टिकियां, सुलफा कक्कड़ हो
लड़भिड़ के 'नज़ीर' भी निकला हो, कीचड़ में लत्थड़ पत्थड़ हो
जब ऐसे ऐश महकते हों, तब देख बहारें होली की।।

- *नज़ीर अकबराबादी*

वर दे, वीणावादिनि वर दे।

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

वर दे, वीणावादिनि वर दे।

- *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

How life is

Be proud of who you are

Walk like a star. You have it all

Be proud of who you are

They will call you names

And think all you want is fame

Everyone has her own story

So it's not important to be same

You don't need to do what she did

Because you're not her

You go on your ways let her go in hers

Be proud of who you are

Walk like a star. You have it all

Be proud of who you are.

Love yourself

By: Anamika Sharma
2nd year diploma in Architecture G.P.S Sunder nagar (H.P.)

We Can Do Everything

Nothing is as strong
As we can't face it head long
Coming with flying colours
Giving them a ding dong
We can do everything

We have the power that we carry inside
We have the will, the passion,
The fight in our eyes
We have the ambition
We can do everything one more time

We can do anything
We can be anyone
We can be happy too
But we have to
Believe in the power of 'we'
As we can do everything

By: Shubham Bhardwaj (Student, MA Geography, 1st year, Delhi School of Economics.)

I CAN FLY EVEN IN CHAINS

A tree says many things…

Gazing at me is the azure sky
Blazing is the dawn so bright
Bedlam of chirrupings signify
Waiting within me is the zeal to fly

Sunbeams accompanying the pleasant warmth
Blessing the denizens with explicit light
Gentle breeze inspiring the mob
Acting as the elixir of life

When the dark friends hover around
Far from me and the other ones
We cease to be quiet and sound
As the enthralling flurry falls down

I love to sit in mother's lap
But the urge to fly never dies
When I see the denizens fly
The urge always magnifies

But I love the sun and the rain
And am habitual to resist the pain
As I can fall but never bend
When they turn violent again and again

I also speak of the greatest bane
When my 'tended to be' best friend
Turns into foe and
Avenges me for what I don't even know

I also speak of the greatest bane
When my 'tended to be' best friend
Turns into foe and
Avenges me for what I don't even know

I love him and help him in need
And never want to be mean
But perhaps he doesn't understand
Where I expect him to stand

The consequence of disturbing the equilibrium
He would never know
Till mother shows her fury
And change what she always does bestow

So I beseech you my friend
As your habitat is in your hands
Lest it should perish
And you will always be cursed for the blemish

However you try to give me pain
I will always be able to gain
The zeal to sing and celebrate
And the ability to fly even in chain….

Akshay Akash

(Student B.Tech. Humanities, Cluster Innovation Centre , DU)

व्यंग्य

घटकैती

बेटी की शादी के बाद चाचा जी को पता चल गया था की बेटी के पिता को कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं| उन्होंने तय किया की अपने बेटे की शादी में बेटी वाले पक्ष को तनिक भी परेशानी महसूस नहीं होने देंगे | वह शुभ घड़ी भी आ ही गई| लड़का ऊँचे खानदान का था और उसमे भी बैंक की सरकारी नौकरी इसलिए आगंतुकों की लाइन लगी रहती थी | आख़िरकार एक लड़की की तस्वीर पसंद की गई | मेरा बैठक तो माने दूसरों के विवाह तय करने के लिए ही बना था | वहीं एक बार फिर कुर्सियां मंगवाई गई, नया बेडसीट बिछाया गया, शर्बत फिर चाय और बिस्कुट आने के साथ ही माहौल गंभीर हो गया| तपाक से लड़की के पिता के बगल में बैठे दिन में सज्जन दिखने वाले पुरुष ने बिस्कुट खाते हुए कहा "समधी जी तो अब मुद्रा की बात हो जाय"| चाचा जी ने कहा की मुझे एक रूपया भी दहेज़ नहीं चहिये | अगर आपको फिर भी देना ही है तो, 11 रूपया, एक जनऊ, और एक टुक सुपारी दे दीजिये मै प्रेम से रख लूँगा | सभी लोग अवाक् हो कर चाचा को देखते ही रह गए | पड़ोस के लोगों को डर लग रहा था की बाराती के लिए भी न कहीं मना कर दे, कितने दिनों से अरमान लगा रखा है | बेटी वालों को लग रहा था कि किसी ने उन्हें क्लोरोमिंट कैंडी खिला दी है | उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था | लगभग दस मिनट तक सब खामोश बने रहे | एक लड़का आया और खाली गिलास और प्लेट लेकर चला गया | थोड़ा आगे जाते ही उसने प्लेट में बचे सारे बिस्कुट पॉकेट में डाल लिए | अचानक लड़की के पिता ने कहा "समधी जी घर पे गोरु को बछड़ा हुआ है , जल्दी जाना पड़ेगा सो अब आज्ञा दीजिये" मै फिर एक दो दिन में आकर आगे की बात फाइनल कर लूँगा | चाचा जी ने ख़ुशी–ख़ुशी सबको विदा किया|
दो महीने बाद एक फ़ोन कर चाचा ने देरी का कारण जनना चाहा | लड़की के पिता ने कहा जरुर आपके लड़के में कोई खराबी होगी, नहीं तो कौन आजकल 11रूपया और जनऊ, सुपारी में शादी करता है| मैंने अपनी बेटी की शादी कर दी चार लाख रुपये और एक मोटर साईकल दिया है अपने दामाद को | चाचा तो अब बन गए चौधरी | कुछ दिन बाद नए लोग आये तो चाचा ने कहा 6 लाख रूपया और और एक अपाची लूँगा |अबकी बार ख़ुशी–ख़ुशी भैया की शादी हो गई | अचानक मुझे ख्याल आया की इनोवेशन के लिए अभी हमारा समाज तैयार नहीं हुआ है | ये केवल CLUSTER INNOVATION CENTRE में ही संभव है||

- संतोष

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र एवं चर्चित व्यंग्यकार हैं |)

Sunday Morning

Do you want one sided love?

It is not easy to define love, but as I think, love is a strong feeling of deep affection for somebody or something. However, in today's society one of our greatest mistakes is to miss the meaning of the word "love".

Our youngsters are habituated to gaze over opposite sex, is it love ?? They want one's love and this affection is essential for them or anyone else. Probably, everybody needs love and everybody has their own feelings. But staring at somebody or chasing somebody can't be considered as love — feeling is constitutive of love. If two hearts meet, it means their feelings must bump to each other.

It is love that gives us more and more pleasure and more and more grief. One sided love is very bothersome and spiny; it can baffle anyone. Now a days, this one sided love is most popular and I have too many examples of this.

Last Sunday, one of my best friend proposed a girl and I was also present there. When he said to her, "I like you, I don't want to hurt you but, heartily I love you"; ridiculously she replied, "I am already in an open relationship, we will remain friends, sorry"!

After that, my friend is crying till now. Whenever he sees that girl, his eyes become tearful. He is crying because his feelings didn't collide with that or her. And nonetheless, he loves her.

“Dear friend, which type of love is this . . .??? Perhaps one sided . . .??? You couldn't understand her and proposed, now the result is in front of you.
Dear friend, love is an ocean and you shouldn't put your legs in this water if you don't know how to swim over it. Please hold your tears and stop moaning, please! You should wait till next February.”

-Kumar Shivam Mishra

(Student, 1st year BA Hons. English, Commerce College, Patna)

A drawing by famous cartoonist Anil Bhargava

दो कवितायें....

-संजय शेफ़र्ड

(आप जाने-माने युवा कवि हैं तथा आजकल बीबीसी में कार्यरत हैं ।)

मेरा प्रेम

बहुत ही अबोध हूँ
बहुत ही अबोध है
मेरा प्रेम
जो कहना चाहता हूँ
कह देता हूँ
तुम्हारे बिना कहे
तुम्हें सुन लेता हूँ
गलतियों पर डांटता
भूल पर फटकारता हूँ
तुम रूठती हो तो
मना लेता हूँ
मान जाती हो तो
जाने अनजाने
तुम्हें रुला देता हूँ
* * *
तुम्हारे आँसू
तुम्हारे दर्द
तुम्हारी तड़प
तुम्हारी भावनाएं
तुम्हारी संवेदनाएं
मुझमें बहती है
तुम्हारे हर दर्द
सहती और गहती हैं
हंसने की बारी आती है
संग-संग हँसता हूँ
रोने की बारी में
तुमसे छुप-छुपकर
रो लेता हूँ
* * *
हर पल
तुम्हें सुनता हूँ
तुम्हें ही सुनाता हूँ
खुशियों को हर बार
साझा कर लेता हूँ
दर्द को छुपाता हूँ
चाहूं तो साझा कर लूँ
दर्द के साथ आँसू भी
जानता हूँ
पी जाओगी
मेरे हर गम
तुम हँसते-हँसते
पर बांटू तो मैं बांटू कैसे ?
* * *
खुशियाँ सूद हैं
जीवन की
दर्द है पूंजी हमारे
हरे -भरे प्रेम उपवन की
कुछ दर्द उठे
कुछ फूल खिले
तुम प्रेयसी
चौका-बर्तन की
मैं प्रेमी घर आंगन का
तुम लिखती हो प्रेम
दर्द मिटाता हूं
मैं प्रेम पथिक
प्रेम के पथ पर चलकर।

पत्थर देह

देह पत्थर होती है
दर्द, तड़प, आंसू देह के नहीं
संवेदनाओ, भावनाओं,
अहसासों के होते हैं

पहले संवेदनाएं मरती हैं
फिर भावनाएं
फिर अहसास
अंत में मरता है 'प्रेम'

देह तब भी पत्थर था,
अब भी पत्थर ही है ।

(चित्रांकन - आर्यन राज)

Akshay Akash

14th Feb 2014

DIARY-NAAMA

EVERYTHING I DID..... ..... WAS FOR YOU
ONCE I USED TO BE WHAT I WAS....

Everything I did, was related to you…
Every step of cognition was for you…
Everything I enjoyed was due to you… and…
Every moment I lived for you…

I woke up early, trained hard and exercised…not only because it is a good habit…but to improve my fitness, so that I could be fit for every match at any moment…

I said prayer daily, closing my eyes, not only because I believe in God… but to improve my concentration, so that I could face the swinging ball in early overs…

I studied hard and stood first in class…not because I liked it. I did it so that my parents and teachers would allow me to play…to be with you…

I enjoyed my life because I wanted to come to you …be with you…my bat and ball…

I enjoyed to keep my mood good before the match…There was a sudden excitement every moment…that each and every action of mine would determine my performance in the game…

"Everything I did…was for you…my love…my life I am hapless as you would never be mine…but I am sure…we will be together again, I LOVE YOU…. And my every action is still related to the time when we were together….and I know "NO MOMENT IS PERMANENT IN LIFE…" I am alone… but believe one thing…"

Don't be disappointed when nobody stands with you. Just say, " I am thankful to those who left me because they taught me that – I CAN DO IT ALONE."

(Photo….Akshay Akash)

किस्सा कोताह...

-अमितेश कुमार

(लेखक दिल्ली विश्विद्यालय में प्रख्याता हैं | आप युवा लेखक और रंगमंच के जानकार हैं | आप रंग-विमर्श नामक अपने चर्चित ब्लॉग पर भी अतिसक्रिय हैं ||)

यहाँ प्रस्तुत हैं आपकी कुछ पुरस्कृत लघुकथाएं...

भूतपूर्व मुखिया ने उचटती हुई निगाह दरवाजे पर डाली और खाली पाकर बाल्टी में खुद पानी भरने लगे, टायलेट खुला हुआ ही था...

सर! प्लेट लाईये ना मोमो निकाला जाए. जूनियर ने दो बार कहा. हां बाबू टाईम से पीएच.डी. ना जमा हो तोसीनियर ही प्लेट लायेगा...

एन.एस.डी. में पढ के क्या मिला? कार रूकती है और एक जूता बाहर निकलता है, उसे यहीं से निकला एक्टर साफ़ करता है, क्या एक्टिंग है!...

भूतपूर्व मुखिया ने उचटती हुई निगाह दरवाजे पर डाली और खाली पाकर बाल्टी में खुद पानी भरने लगे, टायलेट खुला हुआ ही था...

उनका हाथ झटकते हुए, अपना पल्लू संभाल कर कहा, हमलोग का इज्जत नहीं है का! बाबु साहेब!...

उसने रास्ते पर उसका नाम लिखा, कोचिंग जाते हुए बड़े अक्षरो में अपना नाम देख, वह उस पर पैर रखते हुए बढ़ गई और मन में कहा बेवकुफ़!...

आप चाहें तो हमारे बर्थ में आ कर बैठ सकती हैं, नहीं ठीक है... बहुत अकड़ु है सर..जाने दो, इसलिये कहा था ना आजकल किसी की भलाई मत करो...

टेलीविजन पर सत्या फ़िल्म चल रही थी, अंत आते आते वह फूट फूट कर रोने लगा, कल उसके आत्मसमर्पण का दिन था...

बलराम बाबा ने गन्ना लगा कर गांव भर के लड़कों को चौपट कर दिया है..चल निकल, भाग इहां से..टांगे तोड़ देंगे...बित भर का जन्त आ काम...

उसने देखा एस.पी. साहेब के पीछे मंच पर खड़े लोगो का चेहरा वहीं था, इन्हें वह अपने होश से देख रहा था, अधिकारी बदल जाते थे लेकिन चमचे...

लघुकथा ... *नंदलाल*

पागल

उस पागलख़ाने के उन दोनों पागलों का बस एक ही काम था - सुबह से शाम तक तकरीबन ढाई सौ गज़ की दूरी पर खड़े दो विशाल पेड़ों के बीच परस्पर हाथ में हाथ डाले संजीदे चेहरे से गहरी फिलोसोफ़िकल बातें करते हुए चहलकदमी करना | एक तीसरा पागल जो उतना गंभीर नहीं था चुपचाप उनका अनुसरण कर रहा था|

उस दिन मुझसे रहा ना गया और मैं उनकी गंभीरता को समझने हेतु उनदोनों की तरफ़ अनिमेष देखने लगा | तभी तीसरा मेरी तरफ इशारा करते हुए बोल पड़ा-क्या देखते हो उन्हें, वे पागल हैं, पागल|

मुशायरा

ग़ज़ल

वो पहले ख़्वाब का दरवाज़ा खटखटाता है,
फिर आसमान के दरिया में डूब जाता है|

मैं उसको ग़ज़लों की मानिंद जीने लगता हूँ,
वो हर्फ़ हर्फ़ मेरे दिल में छटपटाता है|

सफ़र उजालों का करता है मेरे साथ शुरू,
ये आफ़ताब की क़िस्मत है,डूब जाता है|

तमाम शहर है सहरा घनी उदासी का
इसी उदासी में गुलरेज़ गुनगुनाता है |

-गुलरेज़ शहज़ाद

आजकल

अरे ये गूँगे!! ये जवाब मांगने लगे हैं आजकल,
जरा देखो इन्हें इंकलाब मांगने लगे हैं आजकल |

अमां!! ये भी क्या खूब हिकामत है जुगनुओ की,
कि मुकाबिल आफ़ताब मांगने लगे हैं आजकल |

क्या तुम भी सुन रहे हो ये कानाफूसी,ये आवाजें,
सुना कि वे लोग हिसाब मांगने लगे हैं आजकल |

न जाने क्या हुआ इस कौम को कि अचानक सारे,
लुटे, तफ्तीशे-इन्तिहाब मांगने लगे हैं आजकल |

जो कल तक टुकड़ों की तरफदारी में थे,वे ही सब,
ये क्या हुआ, वे इत्तिहाद मांगने लगे हैं आजकल|

आपकी किस्मतों में जो कुछ भी हिस्सा उनका हैं,
अपना हक वे खानाखराब मांगने लगे हैं
आजकल ||

- राघवेंद्र त्रिपाठी

(छात्र, बी.टेक. आइ.टी. क्लस्टर इनोवेशन सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय)

National Innovation Foundation - India invites submissions of the creative technological ideas/innovations from the students up to class 12 th for the eight national competition for children's ideas and innovations - IGNITE 2014. Best ideas will be awarded by Dr. A.P.J. Abdul Kalam.

Last date for submitting the entries is 31 August 2014.

For More details please visit: http://www.nif.org.in/ignite/index.php

मुर्खदिवस का औचित्य

प्रत्येक वर्ष एक अप्रैल को लगभग आधी से अधिक दुनिया में फूल्स डे यानि मुर्ख दिवस मनाया जाता है| वेलेंटाइन डे की ही भांति हम इसे सहज ही पश्चिमी दुनिया की भेंट मान कर हेय दृष्टि से देखते हैं और फालतू की चीज समझ बैठे हैं| यदि हम इसके तह तक जाने की कोशिश करें तो पता चलेगा कि यह हरेक सभ्यता में किसी न किसी रुप में मौजूद है| सामान्यतः इस दिन लोग एक दूसरे को मजाकिया धोखे देते हैं, ठगते हैं, ताने कसते हैं, चुटकुले कहते सुनते हैं और हँसी-मजाक करते हैं | भारत में इसका उत्साह सिर्फ बच्चों में दिखता है जबकि इसकी अधिक जरुरत बड़ों को है| अच्छा रहेगा कि इस वर्ष हम इसके औचित्य की पड़ताल करें और होली -दिवाली, ईद और क्रिसमस की तरह अपने जीवन में स्वीकार करें|

मुर्ख दिवस का प्रथम लिखित प्रमाण चाउसर नामक एक यूरोपीय लेखक द्वारा 1392 में लिखी कहानी 'डॅन्स प्राइस्टस् टेल' में मिलता है | इस कहानी में एक धूर्त लोमड़ी एक मुर्गे को बुद्धू बनाते हुए अपनी ठगी के जाल में फँसाकर अंत में सफाचट कर जाती है | लेखक इस घटना के दिन को उलझाकर कुछ यूँ व्यक्त करता है-यह घटना उस महीने (सायन मार्च) के शुरुआत के 32 दिनों के बाद की है, जिसमें नये साल की शुरुआत होती है और जिसमें भगवान ने पहले इंसान को पैदा किया था | कुल मिलाकर यह दिन 1 अप्रैल ही निकलता है | वहीं क्रमशः सन् 1508 एवं 1539 में फ्रेंच और फ्लेमिश कवियों इलाय डि अमीरवल तथा एडवर्ड डि डेन की हास्य कविताओं में भी इसकी चर्चा मिलती है| मुर्ख दिवस के प्रारंभ की सर्वाधिक मान्य कहानी भी काफी दिलचस्प है| सन् 1500 से पुर्व नये साल की शुरुआत 25 मार्च से एक सप्ताह तक जश्न-ए-उत्सव मनाया जाता था जो एक अप्रैल को बड़े धूम धाम से समाप्त होता था | लेकिन 1500 ईस्वी के बाद ग्रेगोरियन कलैंडर के प्रचलन में आ जाने से शिक्षित और जानकार लोगों ने 1 जनवरी को नववर्ष उत्सव मनाना शुरु कर दिया | परंतु तब भी यूरोप की एक बड़ी अनभिज्ञ आबादी मर्च-अप्रैल में ही उत्सव मनाती आ रही थी | जब यह उत्सव एक अप्रैल को अपने अंत को पहूँचता तो जानकार लोग उन्हें हकीकत बताकर उनका मखौल उड़ाते | यह सिलसिला कई वर्षों तक जारी रहा और फूल्स डे नाम से एक उत्सव बन गया | मुर्खदिवस के शुरुआत की कहानियों व इतिहासकारों के विचारों से निकलता है कि यह नये साल के आगमन को मनाने का पुराना अंदाज था जो आज नये स्वरुप में विद्यमान है |

नये ईरानी साल की शुरुआत के 13वें दिन लोग एक दूसरे से हँसी मजाक करते हुए जश्न मनाते हैं जिसे वहाँ सिजदाह बेदर कहा जाता है| अंग्रेजी कैलेंडर से यह 1 या 2 अप्रैल का दिन होता है| लोगों का मानना है कि यह परंपरा ईसा के जन्म के पहले से जारी है| फ्रांस, इटली एवं बेल्जियम में एक अप्रैल को पेसकी-डि-अप्रिल - (अप्रैल फिश) मनाया जाता है|

इस दिन लोग एक दूसरे की पीठ पर मछलीनुमा स्टीकर चिपकाकर हँसी मजाक करते हैँ तथा लतीफ़े कहते सुनते हैँ|

पोलैँड और तुर्की में प्रीमा (एक) अप्रैल जोक्स, हँसी- मजाक एवं मजाकिया धोखोँ से भरपूर दिन माना जाता है| कभी कभी तो मीडिया भी लोगोँ को ठगती नजर आती है | स्कॉटलैँड में इस दिन को हंट- दि- गॉउक डे कहा जाता है| स्वीडन और डेनमार्क में एक मई को मेज़-कैट जोकिँग डे अर्थात मजाकिया दिन के रुप में मनाने की परंपरा रही है | स्पेन में यह दिन 28दिसंबर को मनाया जाता है | इसी को रोमन सभ्यता में 15वीँ -16वीँ सदी में फीस्ट ऑफ फूल्स के रुप में मनाया जाता था | चीन और अमेरिकी देशोँ में भी मूर्ख दिवस लंबे समय से एक अप्रैल को मनाया जाता रहा है | यह दिन और उत्सव हमें हँसी मजाक के साथ साथ महान हास्य प्रतिभाओँ को भी स्मरण करने का मौका प्रदान करती है|

बस्टर कीटन चार्ली से बड़ी हास्य प्रतिभा थे किँतु वे कॉमेडियन अधिक थे जोकर कम; सो उतने लोकप्रिय और प्रभावी न हो सके जितने कि चैप्लिन |

संयोग से जिस अप्रैल महीने की पहली तारीख को मूर्ख दिवस मनाया जाता है, उसी महीने की 16 तारीख को महान हास्य कलाकार चार्ली चैप्लिन का भी जन्म हुआ था | इस अभिनेता फिल्मकार ने अपने जीवन चरित्र एवं सिनेमा के माध्यम से 'अपने दुखोँ की कीमत पर दूसरोँ को खुश करने' के अनमोल मानवीय सिद्धांत को स्थापित किया जिसे पूरे विश्व ने सामाजिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषमता से दूर रहकर एक समान लोकतांत्रिक भाव से स्वीकार किया | अपने फिल्मोँ में चार्ली नायक है और जोकर भी | इससे पहले नायक के अपने उपर हँसने-हँसाने का प्रचलन नहीँ था | उन्होँने हास्य एवं करुणा के अद्भुत सामंजस्य से नये कला सिद्धांत को जन्म दिया जो पहले के किसी संस्कृति या साहित्य में नहीँ मिलता है | वह हर 10वेँ सैकेँड में अपने को संकट में घिरा पाता है, अपने को मूर्ख बनाता है, धोखा खाता है, गिरता है.... संभलता हैँ... अजीबो-गरीब हरकतेँ करता है और लोग हँस देते हैँ | वस्तुतः वह एक जोकर है कॉमेडियन नहीँ | जोकर और कॉमेडियन में फर्क है | जोकर हास्य और करुणा का मिश्रण होता है | उसमें रुलाने और हँसाने दोनोँ की क्षमता होती है , मगर वह रोता खुद है जबकि औरोँ को हँसाता है | जोकर बातोँ से कम अपने संकट में घिरे हालात, दयनीय चेहरा और लड़खड़ाते हरकतोँ से ऐसा करता है | उसकी खुद की हँसी बनावटी होती है| कॉमेडियन इन अर्थोँ में जोकर से बिल्कुल भिन्न होतेहैँ | बस्टर कीटन चार्ली से

बड़ी हास्य प्रतिभा थे किंतु वे कॉमेडियन अधिक थे जोकर कम ; सो उतने लोकप्रिय और प्रभावी न हो सके जितने कि चैप्लिन | विष्णु खरे अपनी एक फिल्मी समीक्षा में कुछ यूँ लिखते हैं- "चार्ली को जिसने भी- जहाँ भी देखा, उसमें 'हम' को पाया | यही वजह है कि आम आदमी को अक्सर और सहज भाव में ही चैप्लिन की उपमा दे दी जातीहै क्योंकि हम सभी सुपरमैन नहीं हो सकते हैं| दरअसल मनुष्य स्वयं नियति का विदूषक, क्लाउन या जोकर है | उनकी व्यापक जन स्वीकृति के कारण ही कभी गांधी और नेहरु ने भी उनका सानिध्य चाहा था | राजकपूर ने नकल के आरोपों की परवाह किये बगैर चैप्लिन का भारतीयकरण कर डाला | आवारा ,श्री 420 और मेरा नाम जोकर जैसी फिल्में नायकों के अपने पर हँसकर जगको हँसाने के सिद्धांत पर आधारित हैं |"

बेहतर होगा कि हम चैप्लिन के सिद्धांत के अनुयायी बनें; इस दिन दूसरों को चिढ़ाने- बेवकूफ बनाने और धोखा देने की बजाय खुद पर हँस कर जग को हँसायें तथा औरों में भी यह माद्दा पैदा करें |

भारत की संस्कृति में एकमात्र होली का त्योहार ही हमें जानबूझ कर स्वयं को हास्यास्पद बनाने का अवसर प्रदान करती है | संयोग से यह भी मुर्ख दिवस के आसपास ही मनाया जाता है तथा इसका और भी सहज एवं मुखर रुप है| फिर कैसे न कहें कि मुर्ख दिवस एक विश्वव्यापी उत्सव है| बसंत ऋतु में इसके मनाये जाने के पीछे कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि प्रकृति हमें शरद-बसंत परिवर्तन द्वारा मुर्ख बनाती है | सच्चाई जो भी हो किंतु यह दिन हमें इस अशांत तथा तनावग्रस्त संसार में खुद को हँसने-हँसाने और तरोताजा होने का मौका प्रदान करता है| यह जातीय एवं मजहबी संकीर्णताओं से मुक्त उत्सव है जो हमारी लोकतांत्रिक भावनाओं को और अधिक बढावा देगा | बेहतर होगा कि हम चैप्लिन के सिद्धांत के अनुयायी बनें; इस दिन दूसरों को चिढ़ाने- बेवकूफ बनाने और धोखा देने की बजाय खुद पर हँस कर जग को हँसायें तथा औरों में भी यह माद्दा पैदा करें|

फिल्म मेरा नाम जोकर का यह गीत तो आपको याद ही होगा- अपने पे हँस के जग को हँसाया, बन के तमाशा मेले में आया, हिंदू न मुस्लिम पूरब न पश्चिम,

मजहब है अपना हँसना हँसाना, कहता है जोकर सारा ज़माना.....

यकीन जानिये, इस लेख में मैंने आपको कहीं नहीं ठगा है|

-नंदलाल

बच गया मैं -नंदलाल

बते दिनों भोपाल से लौट रहा था । सफर लंबा था सो मन बहलाने को ए.सी. थ्री टियर के अभिन्न , अनुरागी और श्रवनधैर्य-धर्मी माननीय मित्रवर से यादृच्छया गप्पें मारे जा रहा था| सामने वाले बर्थ पर दो प्रौढ आसन लगाये थे । संस्कार से यूपी के ब्राह्मण प्रतीत होते थे....वे भी आपस में ओष्ट कंपन किये जा रहे थे । बीच बीच में हमारी बातों पर भी कान डाल देते फलस्वरुप कभी कभी क्षणिक शांति छा जाती और मैं संकोचवश ढीला पर जाता था | दरम्यां इसके संदर्भ और प्रसंगवश मैं बोल गया - चौबे चले थे छब्बे बनने दूबे बनकर लौटे | इतना कहना था कि दोनों व्यक्ति मुझ पर बाज़ की भांति यकायक टूट पड़े | बड़ी मुश्किल से अपरिचित शुभचिंतक यात्री मित्रों (भगवान उनकी जीवनयात्रा मंगलमय करें) के हस्तेपक्ष की वज़ह से ही आज आपसे रुबरु हूँ | बचकर पता चाला वे दोनों क्रमशः उमाकाँत दूबे और दीनानाथ चौबे थे । उस दिन से कान पर हाथ रखा है, जातिवादी लोकोक्तियों एवं मुहावरों का इस्तेमाल भूलवश भी नहीं करुँगा....यथा (अंतिम बार कह रहा हूँ) धोबी का गदहा न घर का न घाट का , कहाँ राजा भोज और कहाँ गँगू तेली.... आदि आदि...

JOKES

Titanic was sinking.
Santa: How much the earth is far from here?
Banta: 1 kilo meter.
Santa jumped into the sea and asked again: "...In which direction?"
Banta: Downwards!

This dog, is dog, a dog, good dog, way dog, to dog, keep dog, an dog, idiot dog, busy dog, for dog, 20 dog, seconds dog! .....Now read without the word dog.

by--Aryan Raj

अध्यापक - अच्छा आर्यन ये बताओ, पाज़ामा वचन के हिसाब से क्या है?
आर्यन - जी उपर से एकवचन और नीचे से बहुवचन |

संतालाल ने बन्तालाल से - यार तुने दारू पीना फिर क्यों शुरु कर दिया?
बन्तालाल - समाजसेवा के लिए |
संतालाल - मतलब,कुछ समझा नहीं?
बन्तालाल - जब मैंने दारू पीना बंद कर दिया तो मैंने उन सभी दारू फैक्ट्री के मजदूर , उनके बीवी-बच्चो के बारे में सोचा , तो मेरी आँखे भर आई और उसी समय मैंने फैसला किया की अब से मैं रोज दारू पिऊंगा , और वो भी अलग-अलग ब्रांड की |

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below